



International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2016; 2(2): 27-28

© 2016 IJSR

www.anantaajournal.com

Received: 24-01-2016

Accepted: 26-02-2016

श्रीमती काजल सकसैना

एम.ए. (संस्कृत) एवं नेट,

वरिष्ठ अध्यापक

शा.म.ल.बा.क.उ.मा.वि.

मुरार, ग्वालियर

क्रोध को दूर करने वाली औषधि – “दूर्वा”

श्रीमती काजल सकसैना

अघद्विष्टा देवजाता वीरुच्छपथयोपनी।

आपो मलमिव प्राणैक्षीत्सर्वान् मच्छपथौ अधि।।^१

अघ+द्विष्टा अर्थात् “पाप का द्वेष करने वाली”

यह अघद्विष्टा जिसका प्रसिद्ध नाम दूर्वा है। यह सहस्र काण्ड वाली वनस्पति है। यह हर एक काण्ड से अर्थात् जोड़ से यह बढ़ती रहती है। पित्त रोग, मूर्च्छारोग, मस्तिष्क की अशान्ति, मस्तिष्क की गर्मी, उन्मादरोग आदि के लिए उत्तम है। इसके सेवन से क्रोध की उछल शांत होती है। इसका रस जीरा और मिश्री के साथ के पिया जाता है, गाय के ताजे दूध के साथ भी इसका सेवन किया जा सकता है। सिर संतप्त होने के समय इसको पीस कर सिर पर घना लेप करने से मस्तिष्क की गर्मी हट जाती है। इस वनस्पति के सेवन से क्रोध कम हो जाता है।

दूर्वा पापवृत्ति को भी रोकती है, अर्थात् अन्यान्य इंद्रियों से होने वाले पाप भी इसके सेवन से कम हो सकते हैं। मन शांत हो जाने से अन्य इंद्रियां भी उन्मत्त नहीं होती।

विद्वान् मनुष्य भी क्रोध के समय बुरा भला कहता ही है। यह सब क्रोध की ही लीला है। यदि क्रोध हट गया और उसके स्थान पर शांत स्वभाव आ जाएगा, तो शाप देने की वृत्ति भी हट जायेगी, काम, क्रोध आदि से उत्पन्न होने वाली मनोवृत्तियां यदि सयंम को प्राप्त न हो तो वह असंख्य आपत्तियों पैदा करती है। और मनुष्य का नाश तथा उसके परिवार का नाश एक साथ करती है।

दूर्वा के विभिन्न भाषाओं में नाम

हिन्दी – हरी दूब, दूबड़ा, सफेद दूब। संस्कृत– दूर्वा, शतपर्वा, सहस्रवीर्य, अनन्त, भार्गवी, शतवल्ली। मराठी – नीली (काली) दूर्वा, पांढरी दूर्वा, अंग्रेजी – कौचग्रास (Coachgrass), लेटिन – साइनोडन डैक्टिलन (Cynodon Dactylon), पेनिकम डैक्टिलन (Panicum Dactylon)^२

दूर्वा के गुण–धर्म – दूर्वा शीता कषाया च रक्तपित्तकफापहा^३

यह लघु, स्निग्ध, मधुर, कषाय, तिक्त, मधुर विपाक, शीतवीर्य, त्रिदोषहर, विशेषतः कफपित्तशामक, दाहशामक, तृप्तिकारक, तृषा, वमन, रक्तदोष, श्रम, मूर्च्छा, अरुचि, विमर्ष, अतिसार, प्रवाहिका, अर्श, रक्तपित्त, उपदंश, प्रदर, गर्भस्त्राव, गर्भपात आदि योनिव्यापद्विकार, मूत्रकृच्छ, कुष्ठादित्वग्विकार नाशक है। यह वर्ण्य (कांतिवर्द्धक), रक्तस्तम्भक, मेध्य, व्रणरोपण, जीवनीय एवं प्रजास्थापक है। श्वेत दूर्वा विशेषतः वमन, विसर्प, तृषा, कफ, पित्त, दाह, आमातिसार, रक्तपित्त एवं कास आदि विकारों में विशेष रूप से प्रयोजनीय है। किन्तु यह वीर्य को कम करती तथा काम शक्ति को घटा देती है।

दूर्वा का रासायनिक संगठन

दूर्वा घास का प्रयोग आयुर्वेदिक दवा बनाने में किया जाता है। दूर्वा घास कैल्शियम, फास्फोरस, फाइबर, पोटेशियम, प्रोटीन का स्रोत है। जलाने पर इससे 11.75 प्रतिशत भस्म प्राप्त होती है। जिसमें पोटेशियम, मैगनीशियम एवं सोडियम के लवण पाए जाते हैं।^४

समय पर एक क्रोध के अधीन रहने से कितने कुटुम्ब मिट्टी में मिल जाते हैं, कितने मनुष्यों का नाश हो जाता है। इस प्रकार क्रोध मनुष्य का किस प्रकार से नाश करता है। यह स्वयं स्पष्ट हो जाता है। शाप देना, गाली देना आदि जो वाचा की मलिनता के कारण, जो दोष उत्पन्न होता है, उसका परिणाम मेरे मन पर न हो और मेरे मन में वैसा विचार कभी न आवे ऐसा अथर्ववेद के इस मंत्र में स्पष्ट किया है।

Correspondence

श्रीमती काजल सकसैना

एम.ए. (संस्कृत) एवं नेट,

वरिष्ठ अध्यापक

शा.म.ल.बा.क.उ.मा.वि.

मुरार, ग्वालियर

ब्रह्म यन्मन्युतः शपात् सर्व तन्नो अधस्पदम्।^५

इसके प्रयोग से मन शांत होता है। उछलता नहीं है और मन सुविचार पूर्ण होने से मनुष्य आपतियों से बच जाता है और इसी कारण मनुष्य अपना, अपनी संतान का और अपने ऐश्वर्य का बचाव कर सकता है।

भगवान गौतम बुद्ध ने क्रोध करने से सात अनर्थ बताए हैं। उनके अनुसार जो स्त्री या पुरुष क्रोध करता है। उसके शत्रु को इन सात बातों की प्रसन्नता होती है।

- 1) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु कुरूप हो जाए क्योंकि कोई भी यह प्रसंद नहीं करता कि उसका शत्रु स्वरूपवान हो, सुन्दर हो,
- 2) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु पीड़ा पाए क्योंकि कोई आदमी यह प्रसंद नहीं करता कि उसका शत्रु आराम से रहे।
- 3) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु सम्पन्न न रहे।
- 4) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु धनवान न हो।
- 5) मनुष्य चाहता है कि उसके शत्रु की ख्याति न हो।
- 6) मनुष्य चाहता है कि शत्रु मित्रहीन रहें।
- 7) मनुष्य चाहता है कि मरने पर उसके शत्रु को सुगति न मिले।

क्रोधी आदमी किसी बात को ठीक अर्थ में नहीं समझता। वह अन्धकार में रहता है। वह अपना होश खो बैठता है। वह मुँह से कुछ भी बक देता है। उसे किसी भी बात की शर्म नहीं रहती। वह किसी की हत्या भी कर सकता है। फिर वह साधारण आदमी हो या साधु हो, माता-पिता हो या कोई ओर, वह आत्महत्या तक कर बैठता है।

दूर्वा का उत्पत्ति स्थान

यह सहस्रत्र काण्ड वाली वनस्पति जहाँ पानी होता है, उस स्थान पर इसकी उत्पत्ति होती है। दूर्वा वनस्पति स्वर्ग से यहाँ आई है। द्विलोक से इस औषधि का मूल नीचे आया और पृथ्वी के ऊपर उगा, इस सहस्रत्र काण्ड वाली वनस्पति हमारी सब ओर से रक्षा करे। ऐसा इस मंत्र में प्रार्थना की गई है।

दिवो मूलमवततं पृथिव्या अध्युत्ततम्।

तेन सहस्रकाण्डेन परिणः पाहि विश्वतः।।^६

यदि उक्त औषधि मन को शांत कर सकती है। इससे शाप देने की क्रोधी वृत्ति को दूर किया जा सकता है। काम, क्रोध आदि दोष इसके सेवन से कम होते हैं। इसलिए संयम करने की इच्छा करने वाले मनुष्य को इसका सेवन करना चाहिए। यह मन और इन्द्रियों की मलिन वृत्ति को दूर करती है। यह पाप विचार को मन से हटाती है, मन को शांत कर, मन का मल दूर करती है।

दूर्वा के अन्य लाभ

- 1) दूर्वा घास ब्लड शुगर के लेबल को नियंत्रित करने में मदद करती है।
- 2) दूर्वा घास शरीर में प्रतिरोधक क्षमता को उन्नत करने में सहायता प्रदान करती है।
- 3) महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं विशेषकर यू.टी.आई (यूरेनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन) के उपचार में प्रभावकारी रूप से काम करती है।
- 4) दूर्वा घास पेट संबंधी समस्याओं में अहम भूमिका निभाती है।
- 5) दूर्वा घास फ्लेवनाइड का प्रधान स्रोत है। जिसके कारण यह अल्सर को रोकने में मदद करती है।
- 6) दूर्वा घास त्वचा संबंधी समस्या में भी राहत दिलाने में सहायता करती है।
- 7) दूर्वा घास रक्त को शुद्ध करने अहम भूमिका निभाती है।
- 8) दूर्वा घास हृदय रखने में भी मदद करती है। क्योंकि यह रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में अहम भूमिका निभाती है।
- 9) दूर्वा घास पौष्टिकता से भरपूर होने के कारण शरीर को सक्रिय और ऊर्जावान बनाने में सहायक है।

उपसंहार

यह दिव्य दूर्वा औषधि विविध रोगों को दूर तो करती ही है और साथ ही मनुष्य के क्रोध को भी शांत करती है। यदि मन पूर्ण सुविचारी हो तो योग्य समय पर योग्य कर्तव्य करता हुआ मनुष्य आगे बढ़ जाता है और उन्नत होता जाता है। परन्तु जो मानव अशांत, चंचल मनोवृत्तियों वाला होता है। वह स्थान-स्थान पर प्रमाद करता है और इसके प्रतिपक्षी उसे पीछे रखते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। परन्तु जो मनुष्य मन का संयम करता है, मन को उछलने नहीं देता। कर्तव्य करने के समय गलती नहीं करता उसके प्रतिपक्षी पीछे रह जाते हैं और वह स्वयं आगे बढ़ता जाता है। इस प्रकार इस दूर्वा औषधि के प्रयोग से, मन को शांत और परिवार को सुख समृद्ध बनाया जा सकता है। इसके नियमित सेवन से शरीर और मन में नया जीवन लौट आता है। भारत के वैद्यों को इस विषय पर अधिक विचार कर इसके सेवन के लिए तेल या घृत बनाने का प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अथर्ववेद २.७.१
2. वनौषधि पेज स. ३६६
3. ध०नि० ३.४
4. आयुर्वेद जड़ी बूटी रहस्य पेज २४५
5. अथर्ववेद २.७.२
6. अथर्ववेद २.७.३